रुप नारायण सोनकर का नाट्यसाहित्यः दलित चेतना का नया आयाम

(Roop Narayan's Natya Sahitya: A New Dimension of Dalit Consciousness)

अशोक अंकुशराव दाहिजे
(पीएच.डी. विद्यार्थी)

प्रस्तावना :

आज दलित साहित्य विपुल मात्रा में लिखा जा रहा है। समकालीन दलित साहित्य में रुपनारायण सोनकर जी ने एक चर्चित कवि, नाट्यकार, कहानीकार, उपन्यासकार व सफल अभिनेता के रुप में अपनी पहचान बना ली है। सोनकर जी बेहद संवेदनशील, जुझारु और परिश्रमी लेखक हैं। वे दलित समाज और दलित साहित्य के एक गौरवमयी व्यक्ति हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा और विलक्षण व्यक्तित्व ने दलित समाज एवं साहित्य का सिर ऊँचा किया है। दलित साहित्य के अखिल भारतीय स्वरुप में उनकी उपस्थिती बहुत तेजी से बढ़ी है। सही शब्दों में सोनकर जी मानवता के पूजारी हैं। उनके स्वभाव में न्याय के लिए लड़ने की अजीब सी जिद है और साथ ही वे बेहद भावुक भी हैं। ''रुपनारायण सोनकर वंचितों के लेखक और हमदर्द हैं। किसी गरीब और मजलूम को देखकर उनकी आँखो में आँसू आ जाते हैं और वे हर संभव सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं। दूसरी ओर ऐसे कठोर भी हैं कि समाज हो या साहित्य के बड़े धुरंधर उनके टकराने में जरा भी नहीं हिचकिचाते।''[१]

रुपनारायण सोनकर जी अपनी एक विशिष्ट एवं नयी दलित शैली के लिए प्रसिध्द हैं। सोनकर जी के काहनी, उपन्यास के साथ नाट्य विधा में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। सोनकर जी किशोरावस्था से ही नाटकों में प्रतिभागी के रुप में रंगमंचीय जीवन का श्री गणेश किया था। नाट्य विधा में लेखन एवं मंचन पर प्रस्तुत करना उनके विराट व्यक्तित्व का परिचय करवाता है। उन्होंने अनेक नाटकों का रंगमंच पर अभिनेता के रुप में सफल मंचन किया है। सोनकर जी के अब तक छोटे-बड़े २७ नाटकों का पोक्स बुक्स, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुए है। उनमें बहुचर्चित नाटक इस प्रकार हैं- 'एक डिप्टी कलेक्टर,' 'विषधर', 'महानायक' 'समाजद्रोही और छायावती', 'रहस्य', 'खल-छल नीति' आदि। इन नाटकों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

१. एक दलित डिप्टी कलेक्टर :

'एक डिप्टी कलेक्टर' नाटक सोनकर जी का प्रथम नाटक है। यह नाटक भारतीय दलित साहित्य अकादमी सन २००२ में प्रकाशित हुआ था। इस नाटक को लोकार्पण प्रख्यात निर्माता स्व. श्री. रामनन्द सागर द्वारा किया गया है। इस नाटक में लेखक ने पाठकों को उत्कृष्ट मनोरंजन करवाया है। इसी वजह से यह सफल नाटक माना जाता है। नाटक में एक डिप्टी कलेक्टर पहली पत्नी होते हुए बिना तलाब दूसरी शादी शान से करता है। इस नाटक में लेखक ने पश्चिमी संस्कृति की बात हमारे सामने रखी है। एक भारतीय द्वारा पश्चिमी संस्कृति का अनुकरण कैसा किया जाता है। उनको मर्मस्पर्शी वर्णन इस नाटक में देखने मिलता है।

इस नाटक में सोनकर जी ने आधुनिक भारतीय समाज में जो सभ्य लोग हैं उस पर व्यंग्य किया हुआ है। आधुनिक सभ्यता में फँसे हुए लोग मानवीय जीवन के मूल्य मापदंड भूल गये हैं। पारिवारिक संबंधों में दरारें पड़ी हुई हैं। लोग तनावयुक्त जीवन जी रहे हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृतिक के मूल्यों का हनन हो रहा है। मानव अपना अस्तित्व भूल गया है। इस नाटक को कई बार रंगमंच पर मंचित किया गया है। लेखक ने इस नाटक के माध्यम से अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है।

२. छायावती :

'छायावती' सोनकर जी का दूसरा नाटक है। इस नाटक का प्रकाशन दलित- साहित्य एवं सांस्कृतिक अकादमी, भारत के द्वारा सन २००३ में प्रकाशित हुआ था। विश्व के प्रसिध्द अंग्रेजी लेखक रस्किन बोन्ड ने इस नाटक का लोकार्पण किया था। यह नाटक दलित जीवन की उत्कृष्ठ गाथा है। इस नाटक में छायावती, लग्गा सिंह इंजीनियर, रंजनलाल, ग्राम-प्रधान आदि नाटक के पात्र हैं। नाटक में 'छायावती' का पात्र प्रमुख है। और वह दलित होन के बावजूद भी मुख्यमंत्री के पद विराजन्म होती है। देश सेवा समाज सेवा और दलित उध्दार उनका मूल जीवन मंत्र है। इस नाटक को पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि 'छायावती' का पात्र मूल रुप से 'मायावती' का है, जैसे मायावती उ.प्र. में दलितों के उध्दार के लिए प्रखर कार्य करती हैं। वैसी ही छायावती भी अपने समाज के उत्थान के लिए विभिन्न कार्य करती हैं। वैसी ही छायावती भी अपने समाज के उत्थान के लिए विभिन्न कार्य करती हैं। और उसका स्वाभिमान स्पष्ट झलकता है। यह नाटक रंगमंचीयता की दृष्टि से सफल नाट्यकृति मानी जाती है।

३. महानायक :

'महानायक' सोनकर जी द्वारा रचित तीसरा नाटक है। इस नाटक का प्रकाश दलित साहित्य एवं सांस्कृतिक अकादमी, भारत द्वारा सन २००३ में प्रकाशित हुआ था। इस नाटक का विमोचन भी अंग्रेजी के प्रसिध्द लेखक रस्किन बोन्ड द्वारा किया गया था। इस अवसर पर रस्किन बोन्डा जी ने कहा था कि सिविल सेवा में रहते हुए भी सोनकर लगातार बहुत अच्छा लिख रहे हैं। सोनकर प्रशंसा के पात्र हैं। प्रस्तुत नाटक में लेखक ने दलितों, पीछडों और लाचार लोगों का ब्राह्मण, क्षत्रीय और वैश्यों के स्वार्थी नेताओं के बहकावे में न आने के लिए सावधानी बरतने के का इशारा किया है।

इस नाटक के माध्यम से लेखक ने सामाजिक विषय वर्ण- व्यवस्था की समस्या एवं उसकी शुध्द समाज की गंभीरता के प्रति अपने पाठकों को सजग एवं जागरुक करने का प्रयास किया है।

४. समाजद्रोही :

'समाजद्रोही' नाट्य संग्रह रुपनारायण सोनकर द्वारा सन २००७ में प्रकाशित हुआ था। इस नाट्य-संग्रह में कुल पाँच नाटक संग्रहित हैं। समाजद्रोही, खल-छल-नीति, कलेक्टर साहब की भैंस, बहरे नेता की शाती, इन्टरनेट बूढों को जवान बनाता है।

'समाजद्रोही' नाटक का नाट्यरुपांतरण किया गया है। इस नाटक में राजनीति के क्रुर नेताओं की घटिया राजनीति का पर्दाफाश किया गया है। नेता लोग किस प्रकार अपनी रोटी सेकने के लिए समाज में विद्रोह की स्थिति पैदा करते हैं उनके जीवंत दस्तावेज है। इस नाटक का मंचन २६ अगस्त, २००९ में इन घाटी रंगमंच के द्वारा नाटनहोल में किया गया था। इस नाटक में सोनकर जी ने क्रूर नेता की भूमिका निभाई है। ई.टी. वही. उर्दु ने 'खास बात' कार्यक्रम के अंतर्गत यह नाटक प्रस्तुत किया गया था। यह नाटक के जरिए सोनकर जी की ढेरों सारी शुभकामनाएँ मिली थी।

५. खल-छल-नीति :

यह नाट्य-संग्रह का दूसरा नाटक है। इस नाटक में ग्रामीण साहुकारों के द्वारा दलितों औरत पर किए गय काले कारनामों को व्यक्त किया गया है। नाटक में सत्यनारायण त्रिपाटी जैसे सरपंच अपनी सत्ता के बल से नुनयना जैसी अनेक महिलाओं को फाँसते है और उनके साथ शोषण करते हैं। आज नेता भी अपनी सत्ता के बल से कितनी ही असहायक युवतियों को फँसाकर उसके साथ विभर्त्स व्यवहार करते हैं। यह इस नाटक की मूल समस्या है। इस नाटकों के अलावा सोनकर जी ने 'कलेक्टर साहब की हैंस', 'बहरे नेता जी की शादी' और 'इन्टरनेट बूढों को जवान बनाता है' सभी नाटक हास्य- व्यंग्य प्रधान नाटक है और इस नाटकों में व्यंग्यात्मक भाषा प्रयोग किया गया है।

६. विषधर :

'विषधर' सोनकर जी द्वारा लिखित एक नाट्य-संग्रह है। इस नाट्य-संग्रह का प्रकाशन २००५ में हुआ था। और इस नाट्य-संग्रह का लोकार्पण दिल्ली के मुख्यमंत्री श्रीमती शिला दिक्षित जी ने किया था। उस दौरान शिला दिक्षित जी ने कहा था कि सोनकर जी की रचनाओं में दलितों की पीड़ा और व्यथा देखने मिलती है। सोनकर जी की रचनाओं में स्त्रियों के विकास की बातें देखने मिलती है। और यह उनका सराहनीय कार्य है।

७. रहस्य :

'रहस्य' नाट्य-संग्रह सोनकर जी द्वारा रचित एक महत्त्वपूर्ण नाटक है। प्रस्तुत नाटक का प्रकाश डायमंड पोकेट बुक द्वारा सन २०१५ में हुआ था। इस नाट्य संग्रह का विमोचन पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री.बी.पी.सिंह द्वारा किया गया था। इस नाट्य-संग्रह में कुल मिलाकर १२ बारह नाटकों को संग्रहित किया गया है, जैसे ईश्वरीय न्यायालय, चार कोठियाँ, टी.वी. मुगल प्रेम की दर्दनाम हत्या, दलित की जंग, घर का मुखिया, दलित फौजी की देश के दुश्मनों से जंग, बदलते रिश्ते, चमत्कारी झरना, धरती आकाश, सी.टी. बस ड्राईवर, अरब का शेख, और चैन लूटेरा, इत्यादि।

इस नाट्य-संग्रह का प्रथम नाटक ईश्वरीय न्यायालय है। इस नाटक में समाज के बूरे आदमियों को अपने कुकर्मो का दंड देने के लिए ईश्वरीय न्यायालय में पेश किया जाता है। एक दलित सैनिक देश की किस तरह रक्षा करता है। किस तरह दुश्मनों की जंग जीतता है। उसका मार्मिक चित्रण हमें इस नाटक में देखने मिलता है। इस नाटक में दलित फौजी की साहस गाथा प्रस्तुत की गई है। धरती आकाश नाटक में कुछ शासकों के द्वारा किए गए अत्याचारों को चित्रित किया गया है। सीटी बस ड्राईवर नाटक में नीजी जिंदगी की घटना का जिक्र किया गया है। चैन लूटेरा नाटक में चैन स्नेचर की दिनदहाड़ें की जानेवाली खौफनाक घटनाओं को दर्शाया गया है। अरब का शेख नाटक का खूबसुरत युवा मुस्लिम लड़कियों की दास्तान कथा व्यक्त की गई है। अरब के शेख युवा हसनियों से निकाह करके उसे किस प्रकार दासियों की दाँस्ता में धखल देते हैं उसी विषमताओं को उभारने का प्रयास किया गया है। "सोनकर के किरश्माई व व्यवहारिक लेखन से दलित व गैर-दलित लेखकों में ईर्ष्या पैदा हो गयी है।"[२]

रुपनारायण सोनकर एक सफल नाटककार हैं। उनको नाटकों में रहस्य, रोमांच और कुछ नाटकों में दलित समस्या उभरकर आई है। लेखक स्वयं स्वीकारते हैं कि "मैं इस बात को कबूल करता हूँ कि वास्त्वय में सन १९९९ ई. तक मैं पूर्णतया दलित साहित्यकार नही था।"[३] श्री तेजेन्द्र सिंह की मदद के प्रथम दलित विशेषांक 'वसुधा' पढ़ने को मिला और दलित साहित्य की अवधारणाओं के बारे में स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हुआ, लेकिन आज रुपनारायण सोनकर जी एक सार्थक दलित साहित्यकार है।

हिन्दी दलित साहित्यकारों में खुलकर लिखने का प्रारंभ रुपनारायण सोनकर जी ने किया है। सोनकर जी की अभिव्यक्ति दलितों में नही चेतना का प्रसार करती है। इनका अनुभव जगत व्यापक है। व्यापक अनुभव जगत में विहार करनेवाला ही व्यापक एवं मूल्यवान साहित्य का निर्माण कर सकता है। इनका रचना संसार अपने आपमें महत्व रखता है। साथ-साथ नयी सोच पैदा करता है। समाज में वह प्रभावी बन पडता है। इनकी सोच अन्य रचनाकारों से बिलकुल भिन्न और वैज्ञानिक है। वे साहित्य के माध्यम से समाज में क्रन्तिकारी परिवर्तन लाना चाहते हैं।

संदर्भ :

१. नागफनी पत्रिका, संपा. सपना सोनकर, पृ.४.

२. नागफनी पत्रिका, संपा. सपना सोनकर, प.२३.

३. नागफनी (आत्मकथा), रुपनारायण सोनकर, पृ.१३१.